217
778
H (P)
Microfilm

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY.
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI.
1195/10124
Call No. 778
Book No.

(B)/2011

891.431
J75S

सुलह ओर राष्ट्र-पुकार

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
29 FEB. 1932
Reg. No.........

प्रकाशक—पं० रामविलास अवस्थी
नं० ३०५, गणेशगंज, लखनऊ

* वंदे मातरम् *

सुलह और राष्ट्र-पुकार

जननी जन्मभूमि-वेदी पर जो सर्वस्व चढ़ाते हैं,
अत्याचार-अनीति दबा, दीनों का मोद बढ़ाते हैं;
मातृभूमि की स्वतंत्रता-हित, अपने शीश कटाते हैं,
धन्य-धन्य है जीवन उनका, वही जन्मफल पाते हैं॥

संग्रहकर्ता और प्रकाशक

पं० रामविलास अवस्थी

३१५, गणेशगंज, लखनऊ

सर्वाधिकार सुरक्षित

पहली बार] १९३१ [मूल्य ‌-)

मुद्रक—दयाल प्रिंटिंग वर्क्स, हज़रतगंज, लखनऊ

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 778
Date 21-12-71
GOVT. OF INDIA

* वंदे मातरम् *

सुलह और राष्ट्र-पुकार

राष्ट्रपति वल्लभभाई पटेल

ऐ स्वतंत्र भारत के दूजे राष्ट्रपती गुणखान !
सत्याग्रह की शान, तपस्वी, धीर, वीर, मतिमान !
दीनजनों के परम हितैषी, कृषकों के प्रिय प्रान !
त्यागी परम, देवता सच्चे, कहने को इनसान।
असहयोग के लिये हुई जब नेतों की दरकार।
तुमने तुरत देश पर कर दी बैरिस्टरी निसार॥
पशु-बल मद-माती सत्ता से लड़ने को तैयार।
हुए अहिंसा, सत्य, न्याय की ले कर में तलवार॥
दिव्य अहिंसा-समर बारडोली के विजयी वीर।
भारत-माँ के लाल लाड़ले, महारथी गंभीर॥
तेरा कृषक-संगठन लखकर शासन हुआ अधीर।
ऐ स्वतंत्रता-रणचंडी के वीर शिवाजी धीर॥
तेरे सत्याग्रह-संगर से काँप उठा संसार।
चूर हिली नौकरशाही की, मानी उसने हार॥
नहीं तुम्हें परवाह नाम की, ठोस काम से प्यार।
ऐ पटेल-कुल सूर्य, महाप्रभु गांधी के सरदार !
बेशक बारह दिन का करके अद्भुत समर 'प्रकाश'।
कर दोगे स्वतंत्र भारत को, पराधीनता नाश॥
परम साहसी, आत्मिक बल के बली, राष्ट्र के ताज।
वल्लभभाई पटेल लेयँगे निश्चय आप स्वराज॥

क्षणिक संधि या गांधी-इरविन-ट्रूस

सुलह हुई है जो गाँधी-इरविन, उसे हमें होगा अब निभाना।
हुए हैं ज़ुल्मो-सितम जो अब तक, उन्हें हमें चाहिए भुलाना॥
खुलासा उसका मैं, थोड़े शब्दों में, चाहता हूँ यहाँ बताना।
है फ़र्ज़ हम सबको अपने नेता का हुक्म सर-आँख से बजाना॥
उधर रुका है दमन, इधर हम न भंग क़ानून अब करेंगे।
दबाव, धमकी व बेजबर की, पिकेटिंग होगी हमें कराना॥
विदेशी कपड़ा, नशीली चीज़ों की बिक्री रोकें, हमारा हक़ है।
मगर मज़े में, सुप्रेम-बिनती से, भूले भाइयों को है मनाना॥
बना सकेंगे घरू ज़रूरत के वास्ते हम नमक खुशी से।
मगर न होगा बराय तिजारत नमक को दीगर शहर लदाना॥
लगानबंदी व टैक्सबंदी का काम भी बंद करना होगा।
किसानों को होगा दुःख अपना कलेक्टरी में पहुँच सुनाना॥
ये मुल्क सारा स्वदेशी खादी का श्वेत-सागर दिखाई देवे।
बराय तकमील इसकी घर-घर में होगा चरखा हमें चलाना॥
मिला जो मौक़ा है हमको मित्रो, लड़ाई कुछ दिन को रुक गई है।
तो काम रचना का इस समय में, है पूरे बल से हमें बनाना॥
हो हिंदू-मुसलिम में पूरा एका, अछूत कोई रहे न भाई।
शहर व गाँवों में संगठन का बिगुल हमें होगा अब बजाना॥
पुलिस के ज़ुल्मों की जाँच इसदम महात्मा गाँधी ने छोड़ दी है।
उधर बिना शर्त छूटे क़ैदी जो राजनैतिक, सभी ने जाना॥
लड़ाई में जो हुई थी ज़ब्ती, मिली है वापस, खबर है सबको।
न कोई जुर्माना, टैक्स ज़ायद पुलिस, पड़ेगा हमें चुकाना॥
किया है वादा महात्माजी से कि लॉर्ड इरविनजी जाके लंदन।
करेंगे कोशिश कि माँग भारत की पूरी हो, औ मिटे फ़साना॥
महात्मा गाँधीजी जाके लंदन में दावा-आज़ादी अब करेंगे।
"प्रकाश" उस वक़्त होगा रोशन कि संधि होगी या था बहाना॥

मिस्टर चर्चिल का प्रलाप

किसकी बुलंद आवाज़ ने, भारत को अब जगा दिया?
सोया पड़ा था बेख़बर, किसने इसे उठा दिया?
गुलामी में मेरी था फँसा, चंगुल में मेरे था कसा।
रस्ता इसे आज़ादी का, गाँधी ने अब बता दिया॥
क्या चैन से गुज़रती थी, व्हिस्की शराब ढलती थी।
फ़ाक़ेकशी के दर्जे तक, हमने इसे पहुँचा दिया॥
कपड़ा विलाती छोड़कर, खद्दर से नाता जोड़कर।
लंकाशायर को एकदम, मिलकरके बस रुला दिया॥
करके जबर भी हारे हम, हलचल हुई ज़रा न कम।
चिढ़कर दमन से और भी, लंदन को बस हिला दिया॥

(उत्तर) आज़ादी का दौर

ऐ फ़िरंगी! हिंद में आया है आज़ादी का दौर।
ख़त्म होने को है अब भारत में बरबादी का दौर॥
हो गए हैं कान, बातों में न आएँगे तेरी।
चल चुका चलना था जबतक तेरी उस्तादी का दौर॥
हिंद में आसार पैदा हो चले हैं अम्न के।
मिट गया मशरिक़ से तेरी फ़ितना-ईज़ादी का दौर॥
देख, क्या कुछ कर रहा है, बेनवा "बाग़ी फ़क़ीर"।
इसकी हर जुंबिश से पैदा है इक आज़ादी का दौर॥
पंजसाला अहद था इरविन का कैसा जाँगुदाज़।
आर्डीनेंसों के जाल और उनकी सैयादी का दौर॥
ऐ विलिंग्डन! सोच लो पहला-सा भारत अब नहीं।
इस वतन में अब है क़ौमीयत की शहज़ादी का दौर॥
आओ मैदाने-अमल में बाँधकर "हिंदी" कमर।
हो चुका नग़मा-सुराई नुक़्ता-ईज़ादी का दौर॥

सरकार की मिहरबानी

अजब सरकार की है मिहरबानी देखते जाओ।
फ़ना कर दी हमारी ज़िंदगानी देखते जाओ॥
हमारे जिस्म की रग-रग में ऐसा घुन लगाया है।
बुढ़ापे से है बदतर नौजवानी देखते जाओ॥
बुज़ुर्गों को हमारे घी मिला कसरत से खाने को।
हमें मिलता नहीं पीने को पानी देखते जाओ॥
शराबें तक हुकूमत छोड़ने हमको नहीं देती।
ये हम पर सख़्त बेजा हुक्मरानी देखते जाओ॥
अगर हम अपना हक़ माँगें, तो हम पर गोलियाँ बरसें।
यह कैसी है बलाए-नागहानी देखते जाओ॥
ग़ज़ब है हिंद की दौलत सब इँगलिस्तान को जाए।
सदा भूखें मरें हिंदोस्तानी देखते जाओ॥
हुकूमत के सितम पहले जो देखो देखनेवालो।
फिर उन पर यह हमारी बेज़ुबानी देखते जाओ॥
बहुत थोड़े हैं मुंसिफ़ वर्ना सब हैं रिशवती हाकिम।
अदालत में सिफ़त नौशेरवानी देखते जाओ॥
ज़बर्दस्त इस क़दर हैं मारकर रोने नहीं देते।
सुनो फ़रयादे-ग़म, दर्दे-निहानी देखते जाओ॥
कहाँ तक हो सके तारीफ़ नौकरशाही शासन की।
नहीं ज़ुल्मो-सितम में इसका सानी देखते जाओ॥
न भूलेगी हुकूमत वह सन् अट्ठारह सौ सत्तावन।
ग़दर में हमने की थी मेहमानी देखते जाओ॥
जिहालत की जो औरों ने, तो फाँसी पर हुकूमत ने।
चढ़ाया हर शरीफ़े-खानदानी देखते जाओ।
हज़ारों फाँसी गोली खाएँ लाखों बेकफ़न लाशें।

फ़क़त लाशों पै साक़ी आसमानी देखते जाओ ॥
चलो जलियानवाले बाग़ में पंजाब अमृतसर।
लहू और ग़म के दरिया की रवानी देखते जाओ ॥
मिटे जो मुल्क पर, उनको ज़माना क्या मिटाएगा।
रहेगी खल्क़ में उनकी कहानी देखते जाओ ॥
थके समझाते-समझाते मगर अफ़सोस है इन पर।
हमारी बात इन्होंने कुछ न मानी देखते जाओ ॥
खुदा को भी बुलाया, हैफ़ है! खुश करने को इनके।
तमामी उम्र हमने खाक छानी देखते जाओ ॥
मिटा हमने तो डाला इनकी खातिर अपनी हस्ती को।
इन्हें फिर भी है हमपर बदगुमानी देखते जाओ ॥
कहीं ऐ मुर्ग़-दिल, तुम भी शिकारे-ग़म न हो जाना।
कि सैयाद आजकल दुशमन है जानी देखते जाओ।
कबाबे-दिल-जिगर खाते हैं हम, पीते हैं खुद अपना।
लहू मिस्ले शराबे-अर्ग़वानी देखते जाओ ॥
उड़ी सब ग़म से सुर्खी और क़ायम हो गई ज़र्दी।
मेरे चेहरे का रंगे-ज़ाफ़रानी देखते जाओ ॥
बहुत खाया इन्होंने माल हिंदुस्तान का लेकिन।
हुई अब पेट में इनके गरानी देखते जाओ ॥
बहुत कुछ सह चुके हैं ज़ुल्म अब जीने से तँग आकर।
लड़ाई दोस्तों से हमने ठानी देखते जाओ ॥
लड़ेंगे शांती से कुश्ती, चित हम इनको कर देंगे।
ये दंगल और हमारी पहलवानी देखते जाओ ॥
बचाया जर्मनों से देके जानें हमने राज इनका।
हमारी खिदमत इनकी क़द्रदानी देखते जाओ ॥
इन्होंने और तो सब इल्म जाने लेकिन ऐ "कमतर"।
हमारी जान की क़ीमत न जानी देखते जाओ ॥

दिल की फ़रियाद

सख़्त पक़ताओगे ऐ हमको सताने वालो।
तोप बंदूक़ निहत्थों पै चलाने वालो॥
वादा क्यों झूठा किया था जो न देना था स्वराज।
बोलो ऐ ख़ौफ़े-ख़ुदा दिल से भुलानेवालो॥
गनमेशीनों को तो हैं ढाल हमारे सीने।
सुन लो ऐ मौत की धमकी से डरानेवालो॥
तुम भी दुख पाओगे और चैन न पाओगे कभी।
ऐ हमारे दिले-मुज़तर के दुखानेवालो॥
आज रोते हमें तुम देख के हम पर न हँसो।
तुम भी कल रोओगे ऐ हमको रुलानेवालो॥
क्या कभी रंग न लाएगा ये ख़ूने-नाहक़।
ऐ हमारा लहू बेकार बहानेवालो॥
पेट भरकर हमें मिलता नहीं जौ का टुकड़ा।
ऐ बटर केक मटन चाप उड़ानेवालो॥
जी हुज़ूरीयो, किधर ध्यान है? मेरी भी सुनो।
हाकिमे-वक़्त को सर अपना झुकानेवालो॥
हाय! कैसी तुम्हें ग़ैरों की ग़ुलामी भाई।
ऐ कभी भाइयों के काम न आनेवालो॥
अपने ही भाइयों पर आप चलाते हो छुरी।
क्या तुम इन्सान हो? इन्सानों के खानेवालो!
अपना हक़ माँगने पर हमको बनाया मुजरिम।
तुमने ऐ हाकिमो मौजूदा ज़मानेवालो॥
वाह! सद आफ़रीं! क्या कहने तुम्हारे, शाबाश!
बेख़ताओं को गिरफ़्तार करानेवालो॥
अजब इस झूठ के फ़न में तुम्हें हासिल है कमाल।

वाह ! सच्चाई के नक्क़ारे बजानेवालो ॥
ज़ालिमों के हैं मुलाज़िम भी ख़ुदा के मुलज़िम ।
सुन लो सरकारी नमकख़ार कहानेवालो ॥
जब ज़रा हिंदू-मुसलमानों में होता है सुलूक ।
तुम लड़ा देते हो आपस में, लड़ानेवालो ॥
ख़ूब दिन-रात बस अब रिशवतें खाए आओ ।
डर ही किसका है तुम्हें, पेट बढ़ानेवालो ॥
ज़िम्मए-अम्नो-अमाँ लेके रिआया का तमाम ।
झूठे तुम क्यों बने बतलाओ तो थानेवालो ?
खाके चोटें जो गिरा होके ज़मी पै बेहोश ।
लाठियाँ ग़श में बड़ों को भी लगानेवालो ॥
यह तो बतलाओ कि तुम आप जियोगे कब तक ?
ऐ निशाना हमें गोली का बनानेवालो ॥
तुम करो जाके शुरू इनकी ख़ुदा से फ़रियाद ।
दाद देगा वही ऐ गोलियाँ खानेवालो ॥
हैफ़ ! बेज़ुर्मो-ख़ता है ये मुसीबत तुम पर ।
सब्र दे तुमको ख़ुदा जेल के जानेवालो ॥
हम ग़रीबों की कमाई की ही दौलत है यह ।
तुमने जो पाई है ऐ माल-ख़ज़ानेवालो ॥
जोश यह वह है जो हरगिज़ नहीं दबानेवाला ।
हक़ की आवाज़ को बातिल से दबानेवालो ॥
जिस क़दर हो सके, हाँ, ख़ूब जलाए जाओ ।
बिजलियाँ हम पै शबो-रोज़ गिरानेवालो ॥
क्या हमें बच्चा समझते हो, जो बहलाते हो ।
साफ़ इनकार करो झूठे बहानेवालो ॥
फिर भी इन्साफ़ का दुनिया में है दावा तुमको ।
शर्म आती नहीं ऐ ज़ुल्म के ढानेवालो ॥

ज़ुल्म भी करते हो, फ़रियाद से भी रोकते हो।
कोई हद भी है अरे ! हमको मिटानेवालो ?
नींद सुख की हमें सोने कभी दोगे कि नहीं।
क्योंजी सोए हुए फ़ितनों के जगानेवालो ॥
देखना तर्ज़े-सितम बाक़ी न रह जाय कोई।
मुल्क की दुश्मनी का बीड़ा उठानेवालो ॥
क्या ये दो दफ़े मिला देंगे ख़ुदा से तुमको ?
ऐ ख़िताबों के गवर्मेंट से पानेवालो ॥
होगे कब "कमतरे-नाबीना" को फ़रियाद की दाद।
ऐ ग़रीबों का कभी ध्यान न लानेवालो ॥

स्वर्गीय यतींद्रनाथदास

क्या लिखें आज़ाद होकर हम कहानी दास की।
सुबह-पीरी बन गई शामे-जवानी दास की ॥
दंग हैं सारे तपस्वी, देखना चक्कर में हैं।
रंग लाई देखिए क्या, नौजवानी दास की ॥
पुर-असर है, दर्द में डूबी हुई है किस क़दर।
दिल अगर है, तो सुनो दिल से कहानी दास की ॥
करके लंघन स्वर्ग पहुँचा वह तपस्वी तीन माह।
सोचकर यह बात दिल होता है पानी दास की ॥
फ़ाक़ामस्तो में भी मस्तों की तरह वह मस्त था।
गोया हिकमत का नमूना थी जवानी दास की ॥
लिख गई तारीख़ में हरफ़े-तिलाई से कथा।
अंत तक क़ायम रहेगी ये निशानी दास की ॥
खुलकर ऐ "बिस्मिल" यही दुनिया को अब कहना पड़ा।
देश-सेवा के लिये थी ज़िंदगानी दास की ॥

स्वर्गीय राष्ट्रपति मोतीलाल

अब कहाँ हैं हाय! मोतीलाल प्यारे देश के।
भाग्य ही फूटे हैं क्या, इसदम हमारे देश के॥
हो क़ज़ा तेरा बुरा, तू भी न कल पाए कभी।
हा! अचानक ले गई जो थे दुलारे देश के॥
कौन इस्कीमें निराली अब बनाएगा यहाँ।
कह रहे रो-रोके ये, सब हैं बिचारे देश के॥
गर्व था उनपर हमें आज़ाद होने को बड़ा।
मिट गए अरमाँ सभी क्या आज सारे देश के॥
सन् था उन्नीससौ इकत्तिस, फ़रवरी, तारीख पाँच।
स्वर्ग नेहरूजी सिधारे, नैन-तारे देश के॥

शहीद भगतसिंह

भारत के लिये तू हुआ बलिदान भगतसिंह।
था तुझको मुल्को-क़ौम का अभिमान भगतसिंह॥
वह दर्द तेरे दिल में वतन का समा गया।
जिसके लिये तू हो गया कुर्बान भगतसिंह॥
वह क़ौल तेरा और दिली आरज़ू तेरी।
है हिंद के हर कूचे में एलान भगतसिंह॥
फाँसी पै चढ़के तूने जहाँ को दिखा दिया।
हम क्यों न बनें तेरे क़दरदान भगतसिंह॥
प्यारा न हो क्यों मादरे-भारत के दुलारे।
था जानो-जिगर और मेरी शान भगतसिंह॥
हरएक ने देखा तुझे हैरत की नज़र से।
हर दिल में तेरा हो गया स्थान भगतसिंह॥
भूलेगा क़यामत में भी हरगिज़ न ये "किशोर"॥
माता को दिया सौंप दिलोजान भगतसिंह॥

किसान भाइयों की दशा

कभी न सोचे नगर के भाई, किसान भाई का हाल क्या है?
क्यों सूखा तन है, उदास मन है, ये उसके मन में मलाल क्या है?
ये मुल्की दौलत व क़ौमी इज़्ज़त का पूरा दारोमदार जिसपर।
वही मुसीबत में मुब्तिला है, तो दुःख होना मोहाल क्या है?
हमारे सुख के लिये हमेशा जो सख़्त मिहनत से करता खेती।
वह अन्नदाता हमारा भाई, ये करता हमसे सवाल क्या है?
फ़सल न अच्छी हुई है पैदा, बज़ार-ग़ल्ला गिरा है बिलकुल।
लगान भारी अदा हो कैसे, किया किसीने ख़्याल क्या है?
बेगार, नज़राना औ ज़िमींदारी अत्याचारों से नाकों दम है।
हुई जो थोड़ी-सी छूट भी है, तो उससे होती सँभाल क्या है?
महाजनों से चुसा है ड्योढ़ी, उगाही दे-देके दस के बारह।
क़रज़ के बोझे से मर रहा है, कभी जो हुमसे, मजाल क्या है।
बिलखते भूखों से बालबच्चे, उधर है सख़्ती वहाँ से बाहर।
है सख़्त मुशकिल में जान उसकी, मुहाल इससे सवाल क्या है?
ये ऊँचे बँगले महल व मोटर, हैं जिसके ख़ूँ से उसी को ठोकर।
ग़ज़ब! सितम! यह क़हर है कैसा, उसीकी जाँ पर वबाल क्या है?
जहाँ से इंसाफ़ उठ गया है, न धर्म ही है न कुछ दया है।
है मार सबलों की दुर्बलों पर, समय ये आया कराल क्या है?
जो चारो फल देता देवता-सा, परोपकारी है कल्पतरु-सा।
फ़लक! ये अंधेर उसपै कैसा? बता दे इसकी मिसाल क्या है?
रहम करो सब, तरस करो सब, किसान-भाई के दर्द-दुख पर।
"प्रकाश" उसपर रहम करोगे, तो धर्म ही है, कमाल क्या है?

हिंदू और मुसलमान-भाइयों से प्रार्थना

अब होश को सँभालो, ग़फ़लत भगाते जाओ।
बेशर्म हो छिपो मत, सूरत दिखाते जाओ॥

ख़यालात दुश्मनी के, कुल दूर दिल से कर दो।
उलफ़त की सबके ऊपर, रंगत जमाते जाओ॥
ऐ हिंदू औ मुसलमाँ, आपस में आजकल तुम।
नफ़रत घटाते जाओ, उलफ़त बढ़ाते जाओ॥
पागल बनो न हरगिज़, आपस में सर न फोड़ो॥
सर से दरिंदपन का, सेहरा हटाते जाओ॥
भाई हैं हम हक़ीक़ी, नै फ़र्क़ बाल भर है।
जितने उदू हैं सबको, यह ख़त लिखाते जाओ॥
थी बुज़दिली हमारी, अब तक जो हम गिरे थे।
ताक़त लगा के बिगड़ी, क़िस्मत बनाते जाओ॥
बातें फ़ुज़ूल छोड़ो, कुछ करके अब दिखाओ।
दादों की अपने खोई, इज़्ज़त कमाते जाओ॥
यह फ़र्ज़ है तुम्हारा, ता ज़िन्दगी निबाहो।
भूलों को जल्दी राहे, जन्नत लखाते जाओ॥
रश्को हसद ज़हर को, पी-पी मरें जो उनको।
आबे-हयात मिस्ले, शर्बत पिलाते जाओ॥
नारे लगाओ हरदम, तुम 'बंदे मातरम्' के।
तसबी हिला इबादत, यह अब सिखाते जाओ॥
लगने की बात है क्या, तुम ख़्वाब भी यह देखो।
इक दम न जाय ख़ाली, आदत लगाते जाओ॥
जिसके रगों में क़ौमी, नै जोश है ज़रा भी।
उसकी कमीनी आदत, ग़ारत कराते जाओ॥
हक़ से दुआ यह माँगो, तकलीफ़ दूर कर दो।
रंजो अलम से हमको, राहत दिलाते जाओ॥
अब थाम लो कलेजा, आँखों को मत करो नम।
तुम दिलसे दिल मिला के, फ़ुर्क़त मिटाते जाओ॥

आज़ारे-मुहब्बत से, हूँ नातवाँ मैं अज़हद।
तुम देके वस्ल दारू, सेहत दिलाते जाओ॥
मुझको यही तमन्ना, वक्ते अखीर होगी।
मुझसे खुदा न इनकी, सुहबत छुड़ाते जाओ॥
जिस दम जनाज़ा मेरा, होके शहर से निकले।
शैदाय क़ौम था यह, शुहरत कराते जाओ॥
तस्वीर हिंद हर दम, चश्मों के रूबरू हो।
बुतखाना दिल के अंदर, यह बुत पुजाते जाओ॥
चरखा चला के भाई, सूता बनाओ घर-घर।
करघा गड़ा के अब तुम, खद्दर बुनाते जाओ॥
आफ़त हज़ार सर पै, आवे तो ग़म न करना।
खिदमत में इसके ऐशो, इशरत भुलाते जाओ॥
तरक़्क़ीये हिंद में तुम, कुर्बान जान कर दो॥
"योगी" शहीद होके, जन्नत में जाते जाओ।

ज़ालिम भाइयों से विनती

काकुल की तरह आज जो बल खाए हुए हो।
थोड़ी-सी हुकूमत पै क्यों इतराए हुए हो॥ का०
परवा नहीं है देश, धरम, नीति की तुमको।
स्वारथ का भूत सर पै क्यों चढ़ाए हुए हो॥ का०
जिस हाँड़ी में खाते हो तुम, करते उसी मे छेद।
घर अपना अपने हाथ से जलाए हुए हो॥ का०
बातों में आके ग़ैर की, बनते हो निर्दयी।
डंडा ये बेकसों पै क्यों उठाए हुए हो॥ का०
बर्बाद अक़्ल हो गई सोहबत के असर से।
खुद भाई होके भाई जो भुलाए हो॥ का०
करके ठिकाने होश करो मेल बाहमी।
ऐ हिंदी! क्या लंदन का राज पाए हुए हो? का०

हिंदियों को संदेश

न हिंदियो, बेक़रार हो तुम कि नेक अय्याम आ रहे हैं।
वह जल्द मिट जायँगे जहाँ से, हमें जो ज़ालिम सता रहे हैं॥
न समझो रस्सी या बान उनको, जो जेल में बट रहे हैं क़ैदी।
वह आहनी नोक पापियों के गले की खातिर बना रहे हैं॥
उधर से संगीनें तन रही हैं, इधर से सीने खुले हुए हैं।
इधर है चेहरों पै मुस्कराहट, उधर वह गोली चला रहे हैं॥
इधर इरादा ये कर चुके हैं, क़दम न पीछे हटाएँगे हम।
उधर वह लालच से धमकियों से, हमारे दिल आज़मा रहे हैं॥
खुदा को मंजूर अब यही है कि हिंद में इनक़लाब होगा।
तभी तो भारत के लाल खुश होके जेलखाने को जा रहे हैं॥
थी जिनके क़दमों पै सारी दुनिया की न्यामतें दस्तबस्ता हाज़िर।
खुदा की कुदरत वह आज हँस-हँसके खुश्क रोटी चबा रहे हैं॥
अब वक्ते स्वराज आ रहा है, सदा ये हरसू से आ रही है।
मगर "मुसाफ़िर" को धोखा दे करके और मुद्दत बता रहे हैं॥

अच्छे दिन आनेवाले हैं

ऐ मादरे-हिंद न हो ग़मग़ीं अच्छे दिन आनेवाले हैं।
आज़ादी का पैग़ाम तुझे हम जल्द सुनानेवाले हैं॥
माँ ! तुझको जिन जल्लादों ने दी है तकलीफ ज़ईफ़ी में।
मायूस न हो मग़रूरों को हम मज़ा चखानेवाले हैं॥
कमज़ोर हैं औ मुफ़लिस हैं हम, गो कुंजे-कफ़स में बेबस हैं।
बेकस हैं लाख मगर माता ! हम आफ़त के परकाले हैं॥
हिंदू औ मुसलिम मिल करके, चाहे जो हम कर सकते हैं।
ऐ चर्खे-कुहन ! हुशियार हो तू, पुरशोर हमारे नाले हैं॥
मेरी रूह को करना क़ैद क़तल इमकान से बाहर है उनके।
आज़ाद है अपना दिल शैदा, गो लाख जुबाँ पर ताले हैं॥

मग़लूब जो हैं, होंगे ग़ालिब, मक़्कूर जो हैं होंगे हाकिम।
सदा इकसाँ वक्त रहा किसका, कुदरत के तौर निराले हैं॥
गाँधी ने तर्क-मवालाती यह कैसा मंत्र चलाया है।
लरज़ा है जिससे अर्ज़-समाँ, सरकार को जान के लाले हैं॥

ग़ज़ल स्वदेशी

स्वदेशी तन है, स्वदेशी मन है, स्वदेशी के अब सब ठाट होंगे।
स्वदेशी धन है, स्वदेशी जीवन, स्वदेशी के छन-छन पाठ होंगे॥
स्वदेशी दौलत, स्वदेशी इज़्ज़त, स्वदेशी हशमत, स्वदेशी उलफ़त।
मगन स्वदेशी-लगन में रहकर, न बारह भारत के बाट होंगे॥
चलन स्वदेशी, बसन स्वदेशी, परन स्वदेशी न होवे जिनका।
समझ लो धोबी का उनको कुत्ता, न घर के होंगे न घाट होंगे॥
स्वदेशी सनअत, स्वदेशी जुर्रत, स्वदेशी ताक़त स्वदेशी लयाक़त।
दिखाके जग को करेंगे डगमग, हैरान लंदन के लाट होंगे॥
स्वदेशी हर घर नगर शहर पर, असर करे जब भरपूर अपना।
तो लंकाशायर व मैनचेस्टर में सड़ते कपड़े के गाँठ होंगे॥
स्वदेशी युवकों के खूँ का गारा, स्वदेशी शासन बनाता पुख़्ता।
क्या ग़म, छुटे गर फुआर खूँ की, बदन भर लाठी के साट होंगे॥
गुलामी बेशक कफ़न पहनकर, क़बर के अंदर बसर करेगी।
न खाट में रह सकेंगे खटमल, जो गर्मजल बायकाट होंगे॥
"चकोर" चेतो चतुर ऐ हिंदी, बचाओ दामन विदेशी से तुम।
तुम्हारी आहें जलातीं पत्थर, जलेंगे क्यों ना जो काठ होंगे॥

किसानों की मुसीबत (शेर)

उजड़ते जाते हैं देहात-गुलिस्तान मेरे।
मिटे ज़माने से बेजान हैं किसान मेरे॥
मुल्क की मिल्कियत दारोमदार है जिनपर।
क़ौम की क़ौमियत, हशमत, विक़ार है जिनपर॥

शजरे-देवता की तरह चारो समर देते हैं।
रहे सरसब्ज़ जहाँ खूने-जिगर देते हैं॥
उन्हीं पै गिरती ग़ज़ब-गाज हाय! हरदम है।
न कोई पासबाँ उनका न कोई हमदम है॥
कभी क़ानून से सरकार के लाचार हुए।
कभी सितम से ज़िमींदार के बेज़ार हुए॥
कभी महाजनी खाते से वे बेज़ार हुए।
कभी खुदाई क़हर के भी वे शिकार हुए॥
खून के गारे से कितने बने महल उनके।
गोश्त से कितने बने पोख़्ता दलदल उनके॥
अगर किसानों का ऐसा ही बुरा हाल रहा।
काल पर काल रहा, उनका घर कंगाल रहा॥
बार तेग़े-सितम करता उन्हें हर साल रहा।
बचा न मुल्क में फिर एक मालामाल रहा॥
ठिकरियाँ फोड़ेंगे बच्चे अमीर के घर-घर।
"चकोर" रोएँगे बड़पेटू आलसी घर-घर॥

इति वंदे मातरम्

विज्ञापन

सब प्रकार की धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय पुस्तकें हमारे बुकडिपो में बेपाराना दर में, बहुत किफ़ायत से मिलती हैं, एक बार मँगाकर लाभ उठाइए।

मैनेजर, भारतवासी बुकडिपो
अमीनाबाद लखनऊ

स्वदेशी-गायन-रत्न

सब प्रकार की धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय पुस्तकों का पता—

भारतवासी बुकडिपो, अमीनाबाद, लखनऊ